जनवरी २०१७

कीमत ₹ १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

टीमवर्क

संपादक:
डिम्पल मेहता
वर्ष : ४ अंक: १०
अखंड क्रमांक: ४६
जनवरी २०१७

....

संपर्कसूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपये
यू.एस.ए. : ६० डोलर
यू.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजो।

संपादकीय

बालमित्रों,

पुराने जमाने में एक का ही चलन चलता था। जबकि आज टीम वर्क का ट्रेन्ड है। किसी एक प्रोजेक्ट पर जब सभी मिलकर काम करते हैं, तब उसे टीम वर्क कहते हैं। टीम वर्क के बहुत फायदे हैं। वैसे तो आपको भी इसका अनुभव होगा ही।

महान तत्व चिंतक एन्ड्रयु कार्नेगी टीम वर्क के बारे में कहते हैं कि टीम वर्क एक ऐसी शक्ति है, जो साधारण व्यक्तियों को असाधारण परिणाम प्राप्त करवा सकती है।

तो आइए, आज इस शक्ति को ज्ञानियों की भाषा में समझें और अपने टीम वर्क को और भी ज्यादा प्रभावी बनाएँ।

-डिम्पल मेहता

अक्रम एक्सप्रेस

ज्ञानी कहते हैं...

टीम में हमें एक यूनिट, एक बॉडी की तरह रहना चाहिए। बॉडी के अलग-अलग अंग होते हैं, फिर भी वे सभी अंग मिलकर काम करते हैं।

पूजा में कभी भी बाएँ हाथ को आगे नहीं करते। क्या बाएँ हाथ से कोई पूजा करता है? हालाँकि कई लोग बाएँ हाथ से काम करते हैं लेकिन अधिकतर लोग बाएँ हाथ से थाली पकड़ते हैं और दाएँ हाथ से पूजा करते हैं। फिर भी बायाँ हाथ कभी शोर नहीं मचाता, "बस, तुझे ही लाभ मिल रहा है, मैं रह गया। ऐसा क्यों करते हो?" वह चुपचाप दाएँ हाथ को सहारा ही देता है।

ब्रेन कहता है कि "मेरी वजह से ही आप सब चल रहे हो", हार्ट कहता है कि "मैं हूँ तो यह शरीर चल रहा है?" ऐसा कुछ नहीं है। कोई ऊपरी नहीं है, कोई अन्डरहैन्ड नहीं है। हर एक को छोटी से छोटी उँगली की भी उतनी ही ज़रूरत है, जितनी ज़रूरत इस बड़े सिर की है। सभी अंग हैं। हार्ट है, किडनी है, लिवर है, सभी पार्ट हैं तो शरीर है। सभी की ज़रूरत है। अतः ये सभी अंग होने चाहिए।

लेकिन कभी भी किसी का शोरगुल नहीं होता, "मैं पूरे शरीर में सब से ज्यादा और महत्वपूर्ण काम करता हूँ इसलिए मैं बड़ा हूँ।" और यहाँ... मैं चीफ हूँ, मैं पुराना हूँ और ये नए हैं। अरे! ऐसा सब होना चाहिए? ऐसा करना चाहिए?

क्रिकेट टीम में क्या कप्तान ऐसा कहता है, कि "मैं जीता"? वह कहता है कि "हमारी टीम जीती"। "उसने अच्छा कैच पकड़ा, उसने अच्छी बॉलिंग की, उसने अच्छी बैटिंग की, उसने अच्छी फील्डिंग की, टीमवर्क अच्छा हुआ इसीलिए हमारी टीम जीती।" ऐसा होना चाहिए। भेद नहीं होना चाहिए।

एक खंभे के सहारे तम्बू खड़ा नही किया जा सकता। इसके लिए कई छोटे-बड़े खंभे और कीलें चाहिए। हमें यह ध्यान रखना है कि सभी के योगदान के बिना वह खड़ा नही रह पाएगा।

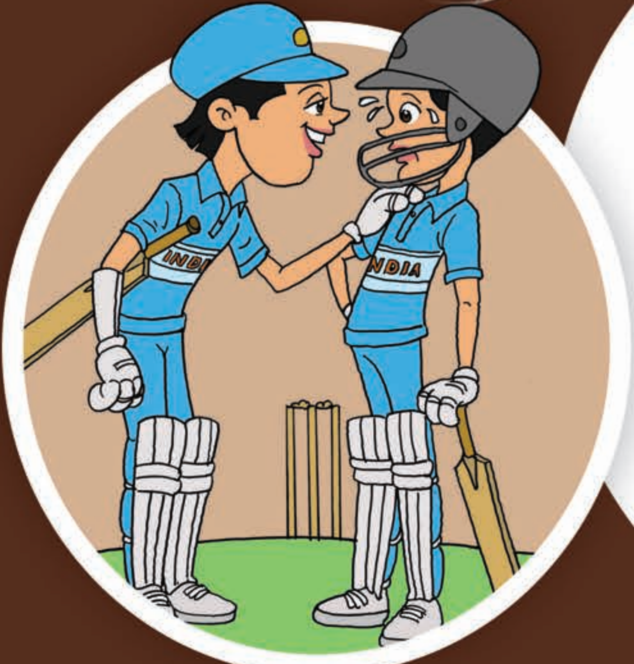

टीम लीडर उसे कहेंगे कि "यदि टीम में कोई कमज़ोर है, तो उसमें ऐसा पावर भरे कि वह आगे बढ़े। कहे कि कोई हर्ज नही है। टीम में मैं भी ज़िरो पर आउट होता हूँ तो तुम क्यों डरते हो? लेकिन तुम निश्चय करो कि अगली बार हम अच्छा खेलेंगे। होता है, गेम है! यदि फेल हो जाए तो कोई चिंता मत करना। उसे ऐसी कुछ हिम्मत दे, उससे कहे कि "हम सब एक ही हैं"। आप मेरे टीम मेम्बर हो।

टीम लीडर को भी यह ध्यान में रहता ही है कि "मै ओनर नही हूँ। और मै अकेला ही सबकुछ नही कर सकता। सभी मदद करते हैं तभी यह हो रहा है।"

यह तो नई ही बात !

गलती कहाँ हो जाती है? यदि हम ऐसे यही देखते रहेंगे कि उसे आगे रखते है और मुझे तो कोई इम्पॉरटन्स देता ही नही है। मैं कितना भी अच्छा करूँ फिर भी तारीफ तो सब उसी की करते हैं। यदि हमेशा ऐसा पक्षपात देखते रहेंगे तो सभी का मन बिगड़ जाएगा।

टुगेदर एवरीवन अचीव्स मॉर

"इस साल के बेस्ट पर्फोर्मेन्स का अवार्ड जाता है..." स्टेज से होस्ट ने एलान किया।

पूरे समारोह में थोड़ी देर के लिए सन्नाटा छा गया। देशभर की प्रतिष्ठित कंपनियों ने इस समारोह में भाग लिया था। कॉर्पोरेट जगत् के लिए यह अवार्ड बहुत ही महत्व का माना जाता है।

सस्पेन्स के थोड़े ही समय में होस्ट ने घोषणा की, "रेडवुड प्राइवेट लिमिटेड"।

तालियों की गड़गड़ाहट के साथ होस्ट ने, रेडवुड कंपनी की टीम को स्टेज पर आने का निमंत्रण दिया। कुछ साल पहले रेडवुड कंपनी का नाम अनजाना था। बहुत ही कम समय में रेडवुड कंपनी ने अद्भुत सफलता प्राप्त करके देशभर में अपना नाम जमा लिया था।

मुबारकबाद देते हुए होस्ट ने कंपनी के टीम लीडर आनंद सेठ के हाथ में ट्रोफी दी, "कन्ग्रेचुलेशन मिस्टर सेठ। रेडवुड कंपनी ने तो कॉर्पोरेट जगत् में डंका बजा दिया है। लेकिन सर बहुत समय से मेरे दिमाग में यह प्रश्न आ रहा है कि कंपनी का नाम "रेडवुड" क्यों रखा?"

आनंद ने माइक हाथ में लिया। चेहरे पर मुस्कराहट के साथ सभी का धन्यवाद किया, "हमारी पूरी टीम की तरफ से आप सभी का बहुत-बहुत धन्यवाद।" होस्ट के सामने देखकर आनंद ने कहा, "सर, सही कहूँ तो हमारी कंपनी की सफलता का मंत्र ही "रेडवुड" है और इसीलिए कंपनी का नाम रेडवुड है।"

होस्ट ने हँसते हुए टोका, "मिस्टर सेठ, आप हमें उलझा रहे हैं।"

आनंद थोड़ा सा मुस्कराए और पूछा, "सर, क्या आप कैलिफोर्निया में आए रेडवुड फॉरेस्ट से परिचित है?"

"नाम सुना है लेकिन कोई जानकारी नहीं है।"

"कैलिफोर्निया के वृक्ष दुनिया के सब से ऊँचे वृक्ष जाने जाते हैं। उनकी उम्र करीब २००० साल की होती है और उनकी ऊँचाई करीब ३५० फीट की होती है। अब बोलो ऐसे विशाल वृक्षों की जड़े कैसी होंगी? क्या श्रोताओं में से कोई इस प्रश्न का जवाब देगा?"

आगे की लाइन में बैठे हुए एक व्यक्ति ने कहा, "बहुत ही गहरी"।

आनंद ने सिर हिलाया और कहा, "सामान्य ढंग से हम ऐसा ही सोचेंगे, लेकिन सचमुच उन वृक्षों की जड़ें बहुत ही छिछरी होती है। उनकी जड़ें ज़मीन में एक-दूसरे के साथ लिपटकर, एक-दूसरे को सहारा देती है और वृक्ष को रक्षण देती है।"

श्रोता आनंद की बात बहुत ध्यान से सुन रहे थे।

"कंपनी का नाम "रेडवुड" इसलिए है कि रेडवुड वृक्षों की तरह हमारी कंपनी का ध्येय भी बहुत ऊँचा चढ़ने का है। जैसे वृक्षों की जड़ें एक-दूसरे के सहारे से, वृक्षों को आँधी और तूफान से रक्षण देती है, वैसे ही हमारी कंपनी की जड़ें यानी कि कंपनी के टीम मेम्बर्स ने भी एक-दूसरे का पूरक बनकर कॉम्पीटिशन का सामना किया और सफलता प्राप्त की।"

श्रोताओं ने तालियों के साथ आनंद के जवाब का अभिवादन किया। जब तालिया बंद हुई तब उनमें से एक व्यक्ति ने पूछा, "लेकिन ऐसी सफलता प्राप्त करने के लिए हर एक टीम मेम्बर की कोई खास विशेषता होना ज़रूरी है न?"

स्टेज पर उपस्थित अपने अन्य टीम मेम्बर विशाल को माइक देकर आनंद ने कहा, "विशाल, तुम इस प्रश्न का जवाब दो।"

विशाल ने माइक हाथ में लिया और कहा, "सर, आपके इस प्रश्न से मुझे एक बात याद आई। करीब २० साल पुरानी बात है। लेकिन मेरे हृदय में आज भी ताज़ी है। उस दिन बास्केट बॉल टीम का सिलेक्शन होनेवाला था। अपने दोस्त के साथ में शांति से एक कोने में बैठा था। टीम में सिलेक्ट होने की हमें कोई आशा नहीं थी। लेकिन हमारे आश्चर्य के बीच कोच ने हमें टीम में सिलेक्ट कर लिया। सामनेवाली टीम के मेम्बर्स बहुत ही स्ट्रोंग होते हुए भी जब हमारा सिलेक्शन हुआ, तब हमें बहुत ही आश्चर्य हुआ। मेरे एक दोस्त ने कोच से पूछा कि ऐसे कुशल प्लेयर्स का सामना हम कैसे कर पाएँगे? और कोच का जवाब मैं आज तक नहीं भूला हूँ।"

जैसे उस घटना की वीडियो फिल्म विशाल की आखों के सामने चल रही हो, वैसे ही वह उस घटना का हूबहू वर्णन करने लगा।

"कोच का जवाब था - टीम स्पिरिट। सामनेवाली टीम का हर एक प्लेयर भले ही कुशल है लेकिन उस टीम में टीमवर्क की कमी है। टीमवर्क में बहुत ताकत है।" टीम का मतलब है,

टी-टुगेदर, इ-एवरीवन, अ-अचीव्स, एम-मॉर। (T-Together, E-Everyone, A-Achives, M-More)

ऐसा कहकर कोच ने हमें एक उदाहरण दिया। एक दिन एक नगर में घोड़ों की स्पर्धा का आयोजन किया गया। जो सब से ज्यादा वज़न उठा सके, वह घोड़ा विजेता बनेगा। विजेता घोड़े ने ४००० पाउन्ड वज़न उठाया। और दूसरे नंबर पर आनेवाले घोड़े ने ३५०० पाउन्ड उठाया। दोनों घोड़े मिलकर कितना वज़न उठा सके उसका पता लगाया गया। दोनों घोड़ों को जोड़ दिया गया। उन दो घोड़ों की टीम ने साथ में मिलकर १२००० पाउन्ड वज़न उठाया! यानी कि अकेला उठा सके, उससे ३५०० पाउन्ड ज्यादा उठाया।

मुझे याद नहीं है कि उस दिन बास्केट बॉल के गेम में हमारी टीम की हार हुई या जीत लेकिन कोच की बताई हुई बात से मुझे टीमवर्क का पावर समझ में आ गया।

सर, इसलिए हर एक टीम मेम्बर में इतनी ही विशिष्टता की ज़रूरत है कि हर एक मेम्बर एक टीम प्लेयर हो क्योंकि टुगेदर...

"एवरीवन अचीव मॉर!" श्रोताओं ने विशाल का वाक्य पूरा किया और पूरा सभाग्रह श्रोताओं की तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा।

प्रेज़न्टेशन

उस दिन अविनाश बहुत गुस्से में था। स्कूल बैग सोफे पर फेंका और मुंह लटकाकर बैठ गया।

मम्मी ने फटाफट अपना काम खत्म किया और अवी के पास आकर बैठ गई, "क्या हुआ अवी बेटा? इतना गुस्सा?"

अवी गुस्से में बोला, "क्या हुआ? हमारे टीम-प्रोजेक्ट का कुछ नहीं हो सकता। मेरी टीम में मेरी कोई सुनता ही नहीं है। स्टॉरी-राइटिंग प्रोजेक्ट के लिए टीचर ने टीम बनाई है। जब अपनी टीम का स्टॉरी राइटर मैं हूँ, तो सभी को मेरी बात सुननी चाहिए न? तश्वी कहती है कि मेरे आइडिआज़ उसे समझ में नहीं आते। लेकिन उसे समझना तो पड़ेगा न? उसे तो बस ड्रॉइंग करना आता है। और वो रिया, उसे तो सिर्फ एक्टिंग के सिवा और कुछ नहीं आता! और फिर भी उसकी इतनी हिम्मत कि वह मुझ से कह सके कि मेरी स्टॉरी में कोई फीलिंग नहीं है। और वो बेवकूफ प्रेम कह रहा था कि मेरी स्टॉरी में कोई वैल्यूज़ नहीं हैं। अब उस बेवकूफ को स्टॉरी राइटिंग की क्या समझ? उसे सिर्फ समाज सेवा करना आता है! ऐन्युअल फंक्शन के दिन हमें प्रोजेक्ट प्रेज़न्ट करना है। और मेरी हालत तो देखो! कोई मेरी सुनने को तैयार ही नहीं है। उनकी वजह से मुझे खराब ग्रेड मिलेगा!"

अवी ऐसे गुस्से में नॉन स्टॉप बोल रहा था।

मम्मी किचन में से एक दूध का ग्लास और थोड़ा नाश्ता ले आई, "बेटा, थोड़ा नाश्ता कर ले। फिर हम बात करेंगे।"

जब अवी थोड़ा शांत हुआ, तब मम्मी ने पूछा, "अवी, तुझे चॉकलेट अच्छी लगती है?"

"मम्मी, चॉकलेट किसे अच्छी नहीं लगती? आपको तो पता है, आइ लव चॉकलेट!"

मम्मी ने बहुत प्रेम से अवी के सिर पर हाथ फिराया, "हाँ बेटा, मुझे पता है कि तुझे चॉकलेट बहुत प्रिय है। क्या तू जानता है कि चॉकलेट कितनी चीज़ों से बनती है?"

"नहीं", रवि को जैसे मम्मी की बात में कोई रूचि नहीं हो, ऐसे उसने छोटा सा जवाब दे दिया।

"कोको, दूध, चीनी और ऐसी बहुत सी चीज़ों के मिश्रण से तेरी प्रिय चॉकलेट बनती है। अब कोको का स्वाद बहुत कडवा होता है, लेकिन जब दूध और चीनी साथ में मिलती है, तब उसका स्वाद कितना अच्छा हो जाता है! बेटा, जैसे चॉकलेट में आनेवाले हर एक पदार्थ का एक फ्लेवर होता है और एक-दूसरे के साथ मिलकर ऐसा अच्छा टेस्ट आता है, वैसे ही हर एक व्यक्ति का एक खास गुण होता है और यदि उन गुणों का मेल हो जाए तो सुंदर रिज़ल्ट आता है। अवी, जैसे तू एक अच्छा राइटर है, वैसे ही तेरे हर एक मेम्बर के पास एक खास गुण है। यदि तू हर एक के गुण पहचानकर उनसे काम लेगा, तो तेरा प्रोजेक्ट इतना सुंदर बनेगा कि सभी को प्रिय लगेगा, एकदम चॉकलेट की तरह!"

थोड़ी देर के लिए अवी एकदम चुप हो गया। मम्मी की बात उसे पसंद तो आई, लेकिन वापस अंदर पड़ा हुआ गुस्सा निकल पड़ा, "लेकिन मम्मी, मैं कोई खाने की चीज़ थोड़े ही हूँ? और मेरी टीम में किसी को लिखना नहीं आता!" ऐसा कहकर अवी अपने रूम में चला गया।

रूम में भी अवी को चैन नहीं पड़ा। थोड़ी देर किताबों के पन्ने पलटे और फिर किताब बंद करके बैठ गया। तभी उसे क्रिकेट की आवाज़ सुनाई दी । वह लिविंग रूम में पापा के पास आकर सोफे पर बैठ गया। थोड़ी देर तक टी.वी. स्क्रीन पर देखता रहा फिर अचानक पापा से कहा, "पापा, विराट कोहली के बिना इन्डिया की टीम कुछ भी नहीं होती न?"

पापा, अवी के सामने देखकर हँसे और बोले, "बेटा, क्रिकेट एक टीम स्पोर्ट्स है। किसी भी टीम को सक्सेस होने के लिए टीमवर्क की ज़रूरत पड़ती है। टीम मेम्बर्स के बीच तालमेल होनी चाहिए। बैट्समेन के बीच में सही कम्युनिकेशन नहीं होता तो विकेट गिरने में देर लगती है? विराट कोहली वास्तव में एक अच्छा प्लेयर है। लेकिन विराट कोहली से भी ज्यादा अच्छे प्लेयर टीम में होते हैं और यदि हर एक प्लेयर अपना ही चलाएगा, तो वह टीम कभी भी सफलता प्राप्त नहीं कर पाएगी।"

"लेकिन पापा, विराट इतना सुपर्ब बैट्समेन है, इसीलिए तो टीम में सभी उसकी सुनते हैं।"

"नहीं अवी। कोहली एक ग्रेट प्लेयर इसलिए है कि उसमें स्पोर्ट्समेन शिप है, नहीं कि इसलिए कि वह अच्छा बैट्समेन है। एक स्पोर्ट्समेन अपनी टीम को खुद से आगे रखता है। अपनी सफलता के लिए नहीं, बल्कि टीम की सफलता के लिए सोचता है।"

तभी कॉमेन्टेटर ने अनाउन्स किया, "एन्ड, इन्डिया विन्स द मैच!!"

आतिशबाजी की आवाज़ से पूरा वातावरण गूँज उठा। अवी भी बहुत उल्लास में आ गया और पापा से लिपट गया। इन्डिया की ऐसी अद्भुत जीत से अवी को टीमवर्क और स्पोर्ट्समेन शिप का महत्व समझ में आया।

दूसरे दिन टीमवर्क में काम करने का निश्चय करके, अवी स्कूल पहुँचा। लेकिन उसके टीम मेम्बर्स उससे बहुत नाराज़ थे। कोई उसके साथ बात नहीं कर रहा था। जब टीचर ने प्रोजेक्ट पर काम करने का टाइम दिया, तब अवी की टीम ने उसे बुलाया भी नहीं।

"सॉरी एवरीबडी! मुझे पता है कि आप सभी मुझ से नाराज़ हो। क्योंकि मैं आपकी नहीं सुनता था और मेरा ही चलाने की कोशिश कर रहा था। प्लीज़, मुझे माफ कर दो।" अवी ने दिल से अपने टीम मेम्बर्स के पास जाकर माफी माँगी।

प्रेम तुरंत ही खड़ा होकर अवी के गले लगा, "इट्स ओ.के. यार! फ्रेंड्स में तो यह सब चलता रहता है। चलो, हम काम में लगते हैं। अब, हमारे पास ज्यादा टाइम नहीं है।"

प्रेम के अभिवादन से अवी को कुछ हल्का लगा। उसने धीरे से प्रेम से कहा, "प्रेम, तूने कहा था कि मेरी स्टॉरी में कोई मॉरल वैल्यू नहीं है। आइ थिंन्क यु आर राइट। मुझे लगता है कि हमें तेरे अनुभव में से ही आइडिआस मिलेंगे।"

"मेरे अनुभव?", प्रेम को आश्चर्य हुआ।

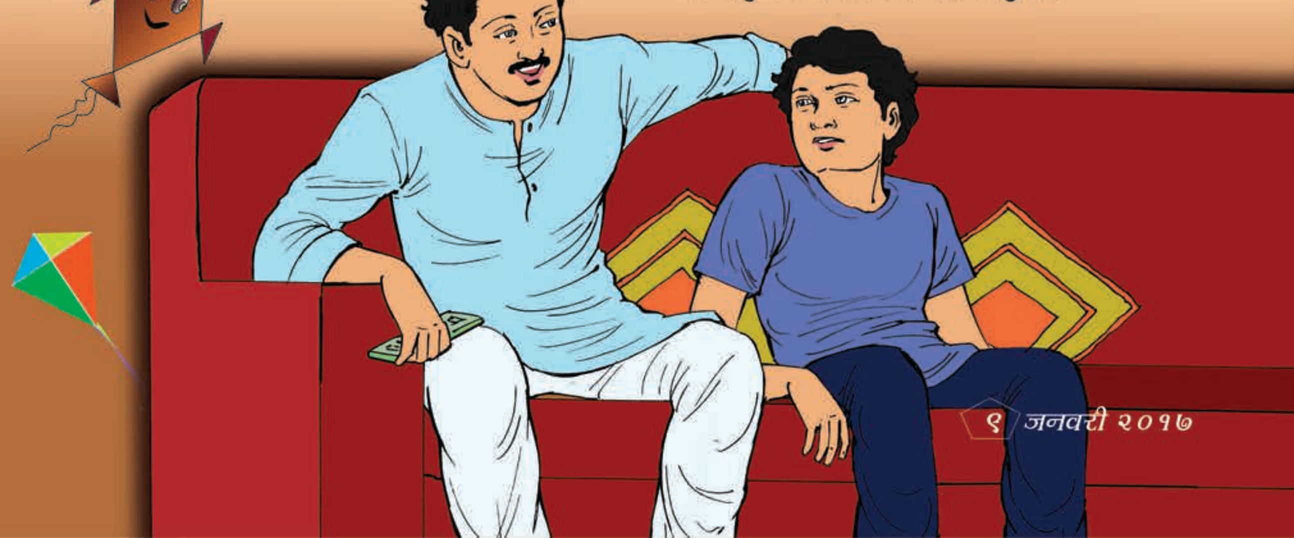

"हाँ!! छोटे बच्चों की सेवा करते-करते तुझे कितने सारे अनुभव होते होंगे..." पहली बार अवी ने प्रेम के काम की कद्र की थी।

छोटे बच्चों का नाम सुनते ही प्रेम के चेहरे पर एक अनोखी चमक दिखी। फ्री टाइम में प्रेम, "लिटस ऐन्जलस" नामक एक संस्था में सेवा देने जाता था। प्रेम के पास बच्चों के साथ के बहुत सारे अनुभव थे।

प्रेम अपने अनुभव शेयर कर रहा था। तब तश्वी उसके अनुभव के सुंदर चित्र बनाने लगी। एक-एक अनुभव को जोड़कर एक सुंदर कहानी बन गई।

तश्वी के चित्र देखकर पूरी टीम स्तब्ध हो गई।

"वाह तश्वी! अब मुझे समझ में आया कि ऐसा क्यों कहा जाता है कि एक चित्र हज़ार शब्द के बराबर होता है। प्रेम के अनुभव की हूबहू प्रस्तुति इन चित्रों में है!"

अवी बोला, "अब मैं इन चित्रों का वर्णन थोड़े शब्दों में करूँ?"

टीम ने अवी को लिखने के लिए प्रोत्साहित किया।

उस शाम को अवी ने खूब मन लगाकर, तश्वी की ड्रॉइंग देखकर स्क्रिप्ट तैयार की। टीम वर्क में काम करने का अवी को एक अनोखा आनंद आ रहा था। दूसरे दिन उसकी स्क्रिप्ट पढ़कर टीम बहुत ही उत्साह में आ गई। प्रेम ने कहा, "वास्तव में अवी, तेरे शब्द में जादू है।"

रिया ने अवी की स्क्रिप्ट हाथ में लेकर ज़ोर से पढ़कर सुनाई।

अवी बोला, "वाऊ रिया! तूने तो स्टॉरी को जीवंत ही कर दिया। तुझे ही स्टॉरी प्रेज़न्ट करनी चाहिए।" पूरी टीम सहमत हुई।

अंत में ऐन्युअल फंकशन का दिन आ गया। रिया के प्रेज़न्टेशन को देखकर सभी का हृदय भर गया। तालियों की गड़गड़ाहट के साथ सभी ने टीम के स्टॉरी प्रेज़न्टेशन का अभिवादन किया। अंत में अवी और उसकी टीम एक दूसरे का हाथ पकड़कर स्टेज पर आए और सिर झुकाकर सभी का आभार माना।

पर्दा गिरते ही अवी दौड़कर मम्मी के पास गया।

"मम्मी, कैसा लगा प्रेज़न्टेशन?"

"मेरे बेटे, एकदम चॉकलेट जैसा!" ऐसा कहकर मम्मी ने अवी की फेवरीट चॉकलेट दी। दोनों एक-दूसरे के सामने देखकर हँस पड़े।

यह बात दो दोस्तों की है। एक दोस्त अंधा है और दूसरे दोस्त के दो हाथ नहीं है। ऐसे देखने जाएँ तो दोनों ही अपंग है लेकिन दोनों की जोड़ी इतनी सुंदर है कि उन्होंने साथ मिलकर नोर्थ चाइना के एक उजाड़ गाँव को वृक्षारोपण करके हरा-भरा कर दिया है। आइए मिलते हैं चाइना के रहवासी जिया हाक्सिया और जिया वेंकी से।

हाक्सिया दाई आँख से पहले से ही अँधे थे। साल २००० में एक दुर्घटना में उन्होंने बाई आँख भी गवाँ दी। जब वेंकी तीन साल के थे तब एक दुर्घटना में उन्होंने अपने दोनों हाथ गवाँ दिए। दोनों ने एक-दूसरे की मदद से गुज़ारा करना शुरू कर दिया।

२००१ की साल में दोनों ने सरकार से आठ एकर ज़मीन किराए पर ली। येली नदी के किनारे की ज़मीन में काँटों और घास के सिवा कुछ नहीं था। उस ज़मीन पर वृक्ष उगाने का काम इस जोड़ी ने ले लिया। बदले में सरकार ने दोनों को वेतन देना मंजूर किया।

हाक्सिया और वेंकी ने कभी नहीं सोचा था कि वे उस उजाड़ जगह को करीब १०,००० वृक्षों से भरा एक सुंदर स्थान बना देंगे। जिसमें पशु-पक्षी आराम से रह सकेंगे। इतना ही नहीं लेकिन इस कार्य से उन्होंने गाँव को बरसात में आनेवाली बाढ़ से बचाया है।

दोनों दोस्तों के बीच इतना सुंदर सुमेल है कि वे हमेशा एक-दूसरे की क्षमता को लक्ष्य में रखकर काम पूरा करते हैं।

बहुत मेहनत करने पर भी यह जोड़ी मुश्किल से अपना गुजारा चलाती है लेकिन फिर भी दोनों को ज़रा भी अफसोस नहीं है। वे कहते हैं, "हम अपने पैरों पर खड़े हैं। भले ही खाना सादा मिलता है लेकिन हमारे दिल में शांति है।"

मित्रों, एक-दूसरे का पूरक बनकर काम करने का यह कितना सुंदर उदाहरण है।

क्राफ्ट एक्टिविटी

सर्व प्रथम चौकोन क्राफट पेपर लें।

उसे चारों ओर से समान फोल्ड करें।

अब पेपर खोलकर क्रोस में दोनों ओर से मोड़ें।

दोनों साइड फोल्ड करके ऊपर से मोड़ें।

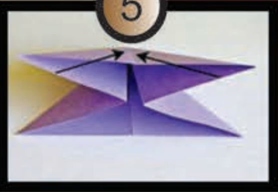

ऊपर से दोनों साइड जोड़ें।

त्रिकोण की ऊपर की दोनों साइड से आधा मोड़कर छोटा त्रिकोण बनाएं।

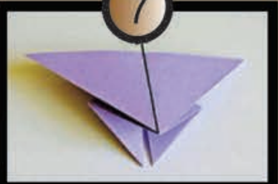

अब त्रिकाण पलटाइए।

त्रिकोण के टॉप को इस तरह से मोड़ें कि थोड़ा बाहर निकलें।

बाहर निकले हुए त्रिकोण को ऊपर दिखाए गए ऐरो के मुताबिक मोड़ें।

उल्टा पलटकर छोटे गोले में जो त्रिकोण है उसे गम से चिपकाएँ।

अब आपका फेवरीट बटरफ्लाइ तैयार।

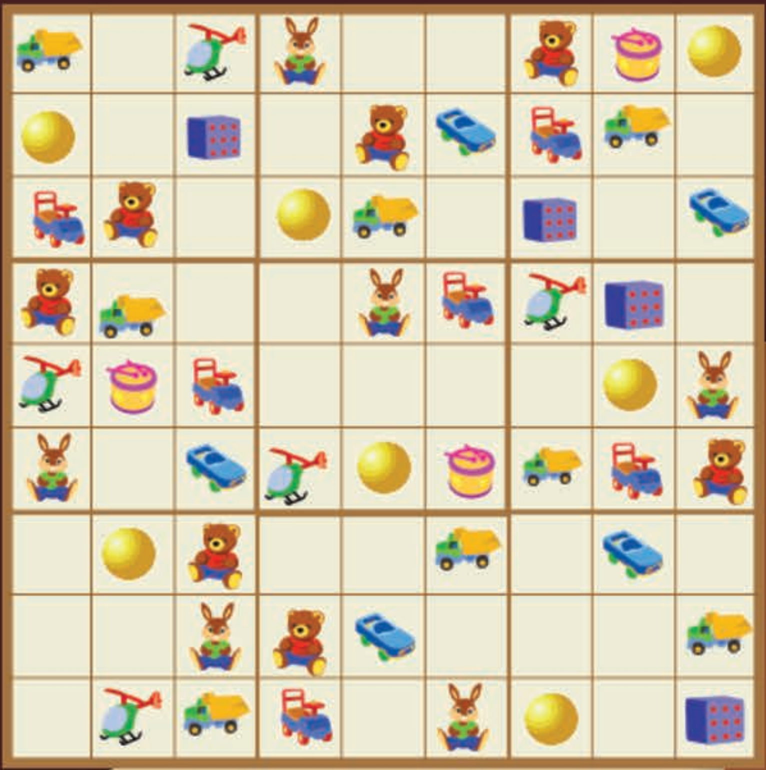

ऊपर दिए गए सर्कल में से बाजु में दिए गए चौकोन में चित्र इस तरह से सेट कीजिए कि आड़ी और खड़ी लाइन में कोई चित्र रिपीट न हो।

चलो खेलें...

बाजु में दिए गए चौकोन बॉक्स में कितने चौकोन और कितने गोले हैं, उसे गिनकर नीचे के गोले और चौकोन में लिखें।

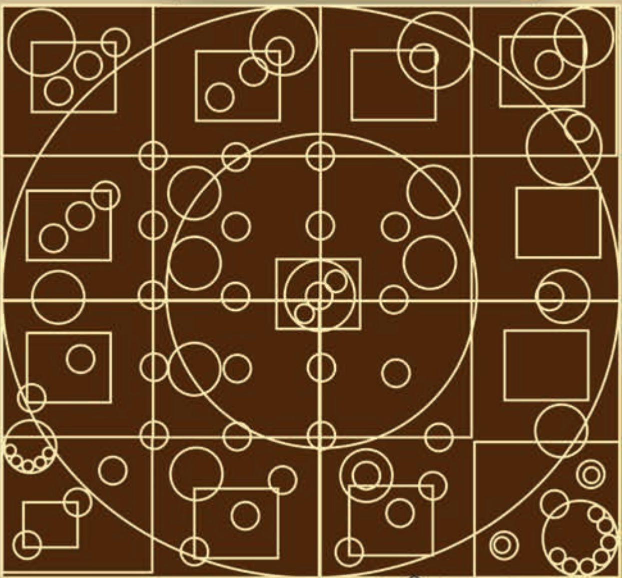

ऐतिहासिक गौरवगाथा

श्रीपुर नामक शहर में श्रीपति नामक एक धर्मिष्ट सेठ रहते थे। उनका कमल नामक एक पुत्र था। वह सभी कलाओं में निपुण था लेकिन धर्म से हमेशा दूर रहता था। देव-गुरु का नाम जहाँ आता वहाँ वह खड़ा ही नहीं रहता।

एकबार सेठ ने उसे समझाते हुए कहा, "बेटा, हम बहतर कलाओं में निपुण हैं, फिर भी यदि हम धर्म कला को नहीं जानते तो हम अनजान कहे जाएँगे। सभी कलाओं में श्रेष्ठ तो धर्म कला ही है।"

कमल ने कहा, "हम किसी का बुरा नहीं करते, यह धर्म ही है न? स्वर्ग और मोक्ष सब यहीं है। कितनी बार धर्म की बात करनेवाले धर्म के नाम पर अपने स्वार्थ को ही साधते हैं। आपको अच्छा लगता है तो आप धर्म करते रहिए। मेरे गले आपकी बात नहीं उतरती।" ऐसा कहकर वह बाहर घूमने निकल जाता।

एक बार सेठ ने कहा, "तू मेरे साथ गुरु महाराज के दर्शन के लिए चल। सुनने से कुछ चिपक नहीं जाता।" उसे ऐसा समझाकर गुरु के पास ले गए।

गुरु महाराज ने कहा, "देख भाई! मैं तुझे एक धर्म कथा सुनाता हूँ। ठीक से सुनना, नहीं समझ में आए तो पूछना।"

धर्मकथा सुनाकर गुरु जी ने पूछा, "तुझे समझ में आया न?"

उसने कहा, "जी महाराज। थोड़ी समझ में आई, थोड़ी नहीं, क्योंकि जब

आप बोल रहे थे तब आपके गले की हड्डी ऊँची-नीची हो रही थी, मैंने उसे १०८ बार तो गिना। फिर आप जल्दी-जल्दी बोलने लगे इसलिए गिनना

मुश्किल हो गया।"

सेठ निराश हो गए। कुछ समय बाद वे उसे दूसरे धर्मगुरु के पास ले गए। उन्होंने कमल के बारे में सेठ से सुना था। इसलिए धर्मगुरु ने कमल से कहा, "आपको हमारे सामने देखने की ज़रूरत नहीं है। आप हमारे उपदेश पर ध्यान रखना।"

उपदेश पूरा होने के बाद उन्होंने पूछा, "कुछ समझ में आया क्या?"

उसने कहा, "जी महाराज, आपने उपदेश शुरू किया तब से अभी तक १००८ चींटियाँ इस दर में गई है। उन्हें मैंने ठीक से गिना है।"

उसकी असभ्यता देखकर वहाँ बैठे हुए व्यक्तियों ने उसे डाँटा। कमल उठकर चला गया। सेठ फिर से निराश हो गए।

एक बार उस गाँव में बहुत बड़े आचार्य पधारे। सेठ कमल को समझाकर उनके पास ले गए। आचार्य जी ने कमल की विचित्रता जानी। उन्होंने कमल को प्यार से बुलाया और समय मिलने पर "फिर आना" ऐसा कहा,

कमल एक बार उनके पास पहुँच गया। आचार्यश्री ने कमल से कहा, "आप क्या जानते हो?"

कमल ने कहा, "मैं तो सिर्फ स्त्री को जानता हूँ।"

आचार्यश्री ने अकुलाए बिना फिर पूछा, "सती स्त्री के लक्षण जानते हो?"

उसने कहा, "थोड़ा ही जानता हूँ लेकिन आप कहेंगे तो मेरे ज्ञान में वृद्धि होगी।"

आचार्यश्री ने सती स्त्री की बात सुनाई। उनकी महा पतिव्रता गुण और दृढ मनोबल की बातें की। यह सुनकर कमल महाराज की बातों से लट्टू हो गया और महाराज को आदर से देखने लगा।

ऐसा करते-करते महीना पूरा हो गया। महाराज का वहाँ से जाने का समय हो गया। उन्होंने कमल से कहा, "भाई! अब हम जाएँगे। इसलिए आप कुछ नियम लो।"

यह सुनकर व्यंग्य करने के स्वभाववाला कमल बोला, "साहब, मेरे तो बहुत सारे नियम हैं। आत्महत्या नहीं करने का, कैक्टस का दूध नहीं पीने का, पूरा नारियल नहीं खाने का, औरों का पैसा लेकर वापस नहीं लौटाने का आदि बहुत से नियम हैं।"

आचार्यश्री बोले, "कमल हमारे सामने ऐसा बोलना आपको शोभा नहीं देता। गुरु का मज़ाक उड़ाने से जन्म ही बढ़ते हैं। नियम बगैर का इंसान, इंसान ही नहीं होता। एकाद नियम लोगे तो आपको हमेशा हमारा स्मरण रहेगा।

इसलिए कोई नियम तो ले ही लो।"

यह सुनकर कमल बोला, "ठीक है साहब, तो नियम करवाइए कि हमारे पड़ोसी जगा कुम्हार का गंजा सिर देखकर

ही मुंह में कुछ डालूँ।"

आचार्यदेव ने यह लाभ का कारण समझकर नियम करवाया और उसका ठीक से पालन करने की सलाह देकर वहाँ से चले गए। कमल उस नियम का निष्ठा से पालन करने लगा।

एक बार कमल को राज दरबार से लौटने में थोड़ी देर हो गई। वह खाना खाने बैठ ही रहा था कि तभी उसकी माता ने याद दिलाया कि आज उसने लगा कुम्हार का गंजा सिर नहीं देखा है। कमल को बहुत भूख और थकान लग रही थी लेकिन नियम का भंग नहीं होना चाहिए, इसलिए वह कुम्हार का सिर देखने उठा। लेकिन पता करने पर मालूम हुआ कि जगा कुम्हार तो पास के गाँव में मिट्टी लेने गया है। इसलिए वह भी उसे ढूँढने निकला। वह घूम घूमकर थक गया था लेकिन कहीं भी जगा नहीं मिला। सिर देखे बिना खा भी नहीं सकता। हिम्मत न हारकर वह आगे चलता रहा।

वहाँ एक बड़े गड्ढे में से जगा मिट्टी खोदते हुए दिखा। धूप में कपड़ा बाँधे बिना जगा मिट्टी खोद रहा था, इसलिए तुरंत ही उसका सिर दिख गया।

कमल को बहुत खुशी हुई और ज़ोर से बोल पड़ा, "देख ली भाई, देख ली।"

उसी समय कुम्हार को धन से भरी हुई मटकी दिखाई दी। कमल की आवाज़ भी उसे उसी समय सुनाई दी। कुम्हार ने समझा कि कमल ने यह धन से भरी हुई मटकी देख ली है। यदि वह राज्य में बता देगा तो सारा धन चला जाएगा और ऊपर से परेशानी होगी। इसलिए कमल को समझा देने से आए हुए धन का लाभ मिल सकेगा।

ऐसा सोचकर कुम्हार ने हाथ ऊँचा करके कमल को रुक जाने के लिए आवाज़ लगाई। कमल ने कहा, "अब क्या है, अब तो देख ली।"

कुम्हार को विश्वास हो गया कि वास्तव में उसने धन की मटकी देख ली है। इसलिए उसने कमल को समझाते हुए कहा, "भले ही तूने धन की मटकी देख ली है लेकिन तू किसी और से मत कहना। यह धन हम दोनों आधा-आधा बाँट लेंगे।"

और दोनों ने धन बाँट लिया। वह धनवान हो गया। धन लेकर वह घर आया। अब वह सोचने लगा, यह सब प्रताप तो गुरु महाराज का है। मज़ाक में लिए हुए नियम से इतना लाभ हुआ तो यदि सच्चे अंतःकरण से नियम लिया जाए तो कितना लाभ होगा? ऐसी श्रद्धा होने से उसने कई छोटे-छोटे नियम लिए। धीरे-धीरे उसने बड़े नियम भी लिए और लेने के बाद उनका ठीक से पालन करने लगा। इस तरह वह मृत्यु के बाद धर्म की आराधना से स्वर्ग में गया।

मीठी यादें

दादा दर्शन अहमदाबाद में नीरू माँ के बेडरूम में भगवान की छोटी-छोटी प्रतिमाएँ थीं। उनमें मार्बल के पाँच छोटे गणपति थे।

एक दिन एक सेवार्थी बहन नीरू माँ के रूम की सफाई कर रही थी। सफाई करते वक्त उनसे गणपति की दो प्रतिमाएँ गिरकर टूट गई। वह बहन नीरू माँ को यह बात बताना भूल गई।

कुछ दिन बाद नीरू माँ दादा दर्शन रहने आए। रूम में मूर्तियाँ कम दिखीं। इसलिए उन्होंने उस बहन से मूर्तियों के बारे में पूछा।

बहन ने नीरू माँ से कहा, "नीरू माँ सफाई करते समय मुझ से मूर्तियाँ टूट गई।"

उस बहन के दिल को बिल्कुल भी दुःख न हो ऐसे, "कोई हर्ज नहीं", कहकर नीरू माँ ने बात खत्म कर दी।

इस तरह किसी भी व्यक्ति से कोई भी नुकसान हो जाए, तब उस व्यक्ति का दिल न टूट जाए वही नीरू माँ के लक्ष्य में रहता था।

देखा मित्रों, ज्ञानियों का प्रेम कितना ग़ज़ब का होता है

कि सामनेवाले व्यक्ति को अपनी भूल स्वीकार करने का भी संकोच नहीं रहता।

और अंत में...

एक बार एक सर्कस में भूल से बाघ का पिंजरा खुला रह गया और बाघ बाहर आ गया, दौड़धाम हो गई। बहुत प्रयत्नों के बाद अंत में बाघ पकड़ में आया तब पता चला कि कई लोगों को धक्का-मुक्की के कारण और कई लोगों को बाघ के कारण छोटी-बड़ी चोट आई थी। लेकिन एक व्यक्ति जो पिंजरे के एकदम नज़दीक था, उसे कुछ भी नहीं हुआ। उससे पूछा गया कि तू कैसे बच गया?

उस व्यक्ति ने कहा, "मैंने तो एक ही काम किया था। जैसे ही बाघ पिंजरे से बाहर निकला कि तुरंत ही मैं पिंजरे में चला गया था। बाघ को पिंजरा अच्छा नहीं लगने से वह बाहर आया, नहीं तो पिंजरा खुला होने पर भी वह अंदर बैठा रहता। अतः एक बात तो तय ही थी कि वह अपनी इच्छा से पिंजरे में वापस आनेवाला नहीं है। इसलिए मैंने सोचा कि मेरी सब से ज्यादा सलामती पिंजरे में ही है।"

व्यक्ति का जवाब सुनकर वहाँ खड़े हुए सभी उसकी बुद्धिमत्ता से खुश हो गए।

पज़ल के जवाब

खुश खबर...
खुश खबर...
खुश खबर...

वाह! अक्रम एक्सप्रेस का कितना मज़ेदार अंक! आनंद और ज्ञान से भरा...

कुछ और मज़े करने हैं?

खेल, कहानियाँ,
फोटो, संगीत...
और भी बहुत कुछ!
बस सिर्फ एक
क्लिक!
kids.dadabhagwan.org

अब आपको बताते हैं इस वेबसाइट की कुछ चीज़ों के बारे में जो मुझे पसंद हैअब आपको बताते हैं इस वेबसाइट की कुछ चीज़ों के बारे में जो मुझे पसंद है

वीडियो

कहानियाँ

गेम्स

किड्स ब्लॉग

आप सोशल मीडिया, जैसे कि f और G+ के माध्यम से जुड़े रह सकते हैं

Akram Express

January 2017
Year : 4, Issue : 10
Conti. Issue No.: 46

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/17-19
valid up To 31-12-2019
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

बहुत मज़ेदार है न! न्यूज़लेटर के सदस्य बनें और नियमित रूप से अपडेट पाएँ।

जल्द ही आ रही हैं...आपकी फेवरिट वेबसाइट अब एक बिल्कुल नई डिज़ाइन में, ज्यादा रंगीन, ज्यादा मज़ेदार और ज्यादा एक्टिविटीस...

kids.dadabhagwan.org

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद **##** हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८९५५००७५०० पर **SMS** करें।

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.**, २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor :- Mr. Dimplebhai Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Printed at **Amba offset** :- Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad - 14 and published